

सम्पूर्ण ब्रह्मा और ब्राह्मणों के सम्पूर्ण स्वरूप के अन्तर का कारण और निवारण

आज हरेक बच्चे का डबल स्वरूप देख रहे हैं। कौन-सा डबल रूप? एक वर्तमान पुरुषार्थी स्वरूप, दूसरा वर्तमान जन्म का अन्तिम सम्पूर्ण फरिश्ता। इस समय ‘हम सो, सो हम’ के मन्त्र में पहले हम सो फरिश्ता स्वरूप हैं फिर भविष्य में हम सो देवता रूप हैं। आज वतन में सभी बच्चों के नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार, जो अन्तिम फरिश्ता स्वरूप बनना है, उस रूप को इमर्ज किया। जैसा साकार ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्रह्मा, दोनों के अन्तर को देखते और अनुभव करते थे कि पुरुषार्थी और सम्पूर्ण में क्या अन्तर है। ऐसे आज बच्चों के अन्तर को देख रहे थे। दृश्य बहुत अच्छा था। नीचे तपस्वी पुरुषार्थी रूप और ऊपर खड़ा हुआ फरिश्ता रूप। अपना-अपना रूप इमर्ज कर सकते हो? अपना सम्पूर्ण रूप दिखाई देता है? सम्पूर्ण ब्रह्मा और सम्पूर्ण ब्राह्मण। हरेक समझते हैं कि ब्रह्मा और हमारे सम्पूर्ण रूप में कितना अन्तर होगा। नम्बरवार तो हैं ना। वहाँ क्या हुआ! नम्बरवार फरिश्ता स्वरूप बहुत बड़े सर्किल में राज्य दरबार के रूप में इमर्ज थे। लाइट के शेड में अन्तर था। कोई विशेष चमकता हुआ रूप था, कोई मध्यम प्रकाश रूप था, लेकिन विशेष अन्तर मस्तक के बीच चमकती हुई मणी के रूप में आत्मा का था। किसी की चमक और लाइट का विस्तार अर्थात् लाइट फैली हुई ज्यादा थी। किसी की चमकती हुई लाइट थी लेकिन फैली हुई नहीं थी। किसी की लाइट ही कम थी। बाप-दादा ने सब बच्चों के अन्तर को चेक किया। तो देखा यन्त्र की स्पीड तेज़ है। पुरुषार्थी और सम्पूर्णता दोनों की समानता का अन्तर भी ज्यादा दिखाई दिया। जैसे विज्ञान के यन्त्र की स्पीड तेज़ है वैसे समानता के पुरुषार्थ की स्पीड उससे कम थी।

बाप-दादा की रिज़ल्ट के ऊपर रूह-रूहान चली कि इतना अन्तर क्यों! ब्रह्मा बाप बोले – मेरे सभी बच्चे नॉलेजफुल हैं। शिव बाप बोले – नॉलेजफुल के साथ त्रिकालदर्शी भी हैं। समझने और समझाने में बहुत होशियार हैं। बाप को फालो करने में भी होशियार है। इन्वेन्टर भी हो गये हैं, क्रियेटर भी हो गये हैं, बाकी क्या रह गया जो अन्तर बड़ा हो गया है। इसका क्या कारण है? कारण तो छोटा-सा ही है। ब्रह्मा बाप बोले – बच्चों की ग्रहण करने की शक्ति बहुत तेज़ है। इसलिए ज्ञान, गुण और शक्तियों को ग्रहण करने के साथ-साथ दूसरों की कमजोरियों को भी ग्रहण करने की शक्ति तेज़ है। ग्रहण करने की शक्ति के आगे गुणग्राहक शब्द भूल जाता है इसलिए अच्छाई के साथ कमजोरियाँ भी साथ में ग्रहण कर लेते हैं। और फिर क्या करते हैं – फिर एक खेल वहाँ इमर्ज हुआ। जो यहाँ आपकी प्रदर्शनियों में एक चित्र भी है। आपका चित्र दूसरे लक्ष्य से है लेकिन रूपरेखा वही है। वह चित्र है शान्ति का दाता कौन? ऐसी रूप-रेखा से कुछ बच्चे इमर्ज हुए। फिर क्या हुआ? कोई एक कमजोरी की बात पहले नम्बर में खड़े हुए बच्चे को सुनाई गई कि यह बात तीव्र पुरुषार्थ के हिसाब से ठीक नहीं है। तो क्या हुआ। उसने इशारा किया दूसरे की तरफ कि यह मेरी बात नहीं है लेकिन इनकी बात है। दूसरे ने कहा कि तीसरे ने भी ऐसे ही किया था तब मैंने किया। चौथे ने कहा कि यह तो महारथी भी करते हैं। पाँचवे ने कहा कि ऐसे सम्पूर्ण कौन बना है! छठे ने कहा अरे यह तो होता ही है। सातवें ने कहा फिर तो सम्पूर्ण हो के सूक्ष्मवतन में चले जायेंगे। आठवें ने कहा बाप-दादा तो इशारा दे रहे हैं, करना तो चाहिए लेकिन संगठन है, न चाहते भी कुछ कर लेते हैं – ऐसे पुरुषार्थ की बात एक दूसरे के ऊपर देखते और रखते हुए बात ही बदल गई। ऐसे आजकल का प्रैक्टिकल खेल बहुत चलता है। और इसी खेल में लक्ष्य और लक्षण में महान अन्तर पड़ जाता है। तो कारण क्या हुआ? इसी संस्कार के कारण सम्पूर्ण संस्कार अभी तक इमर्ज नहीं हो सकते हैं।

तो बाप-दादा बोले इस खेल के कारण पुरुषार्थी और सम्पूर्णता का मेल नहीं हो सकता। मूल कारण ग्रहण करने की शक्ति है, लेकिन गुण ग्राहक बनने की शक्ति कम है। दूसरी बात - इस खेल से भी समझ में आ गई होगी कि अपनी गलती को दूसरे पर डालना आता है, लेकिन अपनी गलती को महसूस कर स्वयं पर डालना नहीं आता इसलिए बाप-दादा ने कहा कि नॉलेजफुल हैं, छुड़ाने में होशियार हैं, लेकिन स्वयं को बदलने में कम। और भी एक कारण निकला, वह क्या होगा? जिस कारण से प्रत्यक्षता होने में कुछ देरी पड़ रही है।

वह कारण है – स्व-चिन्तन। स्व के प्रति स्व-चिन्तक और औरों के प्रति शुभ-चिन्तक। स्व-चिन्तन अर्थात् मनन शक्ति और शुभ चिन्तक अर्थात् सेवा की शक्ति। वाचा की सेवा के पहले शुभचिन्तक भावना से जब तक धरती को तैयार नहीं किया है, तब तक वाचा की सेवा का भी फल नहीं निकलता। इसलिए पहले सेवा का आधार है – शुभचिन्तक। यह

भावना आत्माओं की ग्रहण शक्ति बढ़ाती है। जिज्ञासा को बढ़ाती है। इस कारण वाणी की सेवा सहज और सफल हो जाती है। तो स्व के प्रति स्व-चिन्तन वाला सदा माया प्रूफ, किसी की भी कमजोरियों को ग्रहण करने से प्रूफ होगा। व्यक्ति व वैभव की आकर्षण से प्रूफ हो जाता है इसलिए दूसरा कारण निवारण के रूप में सुनाया – शुभ-चिन्तक और स्व-चिन्तक बनो। दूसरे को नहीं देखो, स्वयं करो। आप सब पुरुषार्थियों का स्लोगन है ‘मुझे देखकर और करेंगे।’ ‘और को देखकर मैं करूँगा’ यह नहीं है। तो सुना, क्या रूह-रूहान चली?

आजकल बाप-दादा कौन-सा काम कर रहे हैं? फाइनल माला बनाने के पहले मणकों के सलेक्शन का सेक्शन बना रहे हैं तब तो जल्दी-जल्दी पिरोते जायेंगे ना। तो हरेक अपने-आपको देखो मैं किस सेक्शन में हूँ। नम्बरवन हैं 8 रत्न और सेकेण्ड हैं 100, थर्ड हैं 16 हजार। नम्बरवन की निशानी क्या है? नम्बर वन आने का सहज साधन है – जो नम्बरवन ब्रह्मा बाप है, उसी वन को देखो। देखने में तो होशियार हो ना। अनेकों को देखने के बजाए एक को देखो। तो सहज हुआ या मुश्किल हुआ? सहज है ना। तो 8 रत्नों में आ जायेंगे। सेकेण्ड और थर्ड को तो जानते ही हो।

जैसे भाग्य में अपने को आगे करते हो, वैसे त्याग में ‘पहले मैं’ जब त्याग में हरेक ब्राह्मण आत्मा ‘पहले मैं’ कहेगा तो भाग्य की माला सबके गले में पड़ जायेगी। आपका सम्पूर्ण स्वरूप सफलता की माला लेकर आप पुरुषार्थियों के गले में डालने के लिए नज़दीक आ रहा है। अन्तर को मिटा दो। हम सो फरिश्ता का मन्त्र पक्का कर लो तो साइन्स का यन्त्र अपना काम शुरू करे और हम सो फरिश्ते से हम सो देवता बन नई दुनिया में अवतरित होंगे। ऐसे साकार बाप को फालो करो। साकार को फालो करना तो सहज है ना। तो सम्पूर्ण फरिश्ता अर्थात् साकार बाप को फालो करना।

आज कर्नाटक का ज़ोन है। कर्नाटक की विशेषता बहुत अच्छी है। कर्नाटक वाले शमा पर परवाने बन जलने में होशियार हैं। वहाँ परवाने बहुत हैं, जलने में नम्बर वन हैं। जलने के बाद है चलना। तो जलने में बहुत होशियार हो। चलने में थोड़ा क्या करते हैं! चलने में चलते-चलते बाईप्लाट बहुत दिखाते हैं। भावना मूर्त नम्बरवन हैं। स्नेही और सहयोगी मूर्त भी हैं। कर्नाटक निवासियों की विशेषता रचयिता बनने में होशियार है। विष्णु बनना कम आता है, ब्रह्मा बनना अच्छा आता है। शंकर, विष्णु बनना कम आता है। ब्रह्मा बनना अच्छा आता है। शंकर रूप अर्थात् विघ्न-विनाशक – उसका भी पुरुषार्थ अभी और ज्यादा चाहिए। फिर भी बाप-दादा कर्नाटक निवासियों को मुबारक देते हैं। क्यों मुबारक देते हैं? क्योंकि प्रेम स्वरूप लगन में मगन रहने में अच्छे पुरुषार्थी हैं। अभी आगे कर्नाटक को क्या करना है, जो रह गया है। कर्नाटक की धरती फलदायक है। वी.आई.पी. के फल देने योग्य है और सहज ही सम्बन्ध में आने वाले हैं। सिलवर जुबली में प्रत्यक्ष फल नहीं दिया है। वी. आई. पी. का ग्रुप कहाँ लाया है? जैसे सहज धरनी है वैसे भारत में आवाज़ फैलाने के निमित्त बनने वाली आत्मायें वहाँ से निकल सकती हैं। भारत की हिस्ट्री में नामीग्रामी आत्मायें कर्नाटक में बहुत हैं। जिस एक द्वारा बहुतों का कल्याण सहज हो सकता है। सिलवर जुबली की सौगात क्या लाई है? कर्नाटक अभी कमाल दिखाये।

ऐसे सदा स्व-चिन्तक और शुभ चिन्तक, सदा फालो फादर, स्व-परिवर्तन से विश्व-परिवर्तन करने वाले, ऐसे विश्व-कल्याणकारी, सर्व आत्माओं द्वारा सत्कारी, सदा त्याग में पहले मैं करने वाले, ऐसे श्रेष्ठ भाग्यशाली, मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं को बाप-दादा का याद, प्यार और नमस्ते।

सेवाओं के लिए बापदादा की विशेष प्रेरणायें

अभी सेवा के अच्छे चान्स आ रहे हैं। साकार और निराकार दोनों को प्रत्यक्ष करने का समय सपीप आ रहा है। इसमें क्या नवीनता करेंगे? हर फंक्शन में कोई-न-कोई नवीनता तो करते हो ना। तो इस शिवरात्री पर विशेष क्या करेंगे?

1. जैसे पिछली बारी लाइट एण्ड साउण्ड का संकल्प रखा तो हरेक ने अपने-अपने स्थान पर यथाशक्ति किया। शिवरात्री पर जैसे गीता के भगवान को सिद्ध करने का लक्ष्य रखते हो ना, लेकिन कटाक्ष करते हो तो लोगों को समझ में नहीं आता है। इसके लिए इस बार शिवरात्री के दिन दो चित्रों को विशेष सजाओ – एक निराकार शिव का दूसरा श्रीकृष्ण का। विशेष दोनों चित्रों को ऐसे सजाकर रखो जैसे किरणों का चित्र बनाते हो ना। शिव का भी किरणों वाला चित्र सजाया हुआ

हो और श्रीकृष्ण का भी किरणों का चित्र सजाया हुआ हो। विशेष दोनों चित्रों की आकर्षण हो। कृष्ण के चित्र की महिमा अलग और शिव की महिमा अलग। कटाक्ष नहीं करो लेकिन दोनों के अन्तर को सिद्ध करो। स्टेज का विशेष शो यह दो चित्र हों। जैसे कोई भी कॉन्फ्रेंस आदि करते हो तो कॉन्फ्रेंस का सिम्बल सजाकर रखते हो, फिर उसका अनावरण कराते हो। ऐसे शिवरात्री पर कोई भी वी.आई.पी. द्वारा इन दोनों चित्रों का अनावरण कराओ और उन्हें थोड़े में पहले उसका अन्तर स्पष्ट कर सुनाओ। फिर सभा में भी इसी टॉपिक पर जिस समय शिव की महिमा करो तो भाषण के साथ-साथ चित्र भी रखो। भाषण करने वाले साथ-साथ चित्र दिखाते जाएं। यह ये हैं – यह ये हैं। तो सभी का अटेन्शन जायेगा। पहले अन्तर सुनाकर फिर उनको कहो अब आप जज करो कि रचयिता कौन और रचना कौन! तो गीता का ज्ञान रचयिता ने दिया या रचना ने? तो इस शिवरात्री पर इन दो विशेष चित्रों का महत्व रखो।

2. जैसे पिछली बारी लाइट एण्ड साउण्ड की टेप में कमेन्ट्री भरी हुई थी वैसे नहीं लेकिन प्रोग्राम के बीच में शिवबाबा का सजा हुआ लाइट का चित्र सामने लाओ और सामने रखते हुए सब लाइट बन्द कर दो, उस चित्र की लाइट ही हो फिर धीरे-धीरे डायरेक्ट उस समय बाप की महिमा करते जाओ। महिमा करते उनको भी महिमा में लेते चलो। महिमा सुनाते हुए अनुभव कराओ। शान्ति का सागर कहो तो शान्ति की लहर फैल जाए। जो भी गुण वर्णन करो उसकी लहर फैल जाए। उस समय सब लाइट बन्द होनी चाहिए। सिर्फ एक उस चित्र की तरफ सबका अटेन्शन हो। धीरे-धीरे ऐसे अनुभवी मूर्त होकर महिमा करो। जैसे साथ में लिए जा रहे हैं। शान्ति का सागर कहा तो जैसे उसी सागर में सब नहा रहे हैं, ऐसा अनुभव कराओ। जैसे योग की कॉमेन्ट्री करते हो धीरे-धीरे वैसे उनको लक्ष्य देकर उसी रीति से बिठाओ तो एक अटेन्शन जायेगा और दूसरा अन्तर का मालूम पड़ जायेगा। कट करने की जरूरत नहीं होगी। स्वतः ही सिद्ध हो जायेगा।

3. हर फंक्शन में योग शिविर के प्रोग्राम का एनाउन्स जरूर करो। चाहे एक दिन का फंक्शन करते हो लेकिन योग शिविर के फार्म जरूर भराओ। योग शिविर के फार्म का विशेष टेबल बना हुआ हो उसमें नज़दीक स्थान के लिए फार्म भराओ। तो जो पीछे योग शिविर करने आयेंगे वह सम्पर्क में आ जायेंगे। योग शिविर के फार्म भराकर पीछे भी उनका सम्पर्क बनाते रहो। कोई भी प्रोग्राम करो उसमें योग शिविर को विशेष महत्व दो।

4. जो भी चान्स मिलते हैं और जो भी सम्पर्क में आये हैं, या कोई विघ्नों के कारण भागन्ती हो चले गये हैं, उनको ऐसे मौके पर विशेष निमन्त्रण दो। जो अपनी कमजोरियों के कारण पीछे रह गये हैं उनको स्नेह से आगे बढ़ाना चाहिए। ऐसे प्रोग्राम से उनमें भी जागृति आयेगी। उमंग में आ जायेंगे।

वरदान:- अटल भावी को जानते हुए भी श्रेष्ठ कार्य को प्रत्यक्ष रूप देने वाले सदा समर्थ भव

नया श्रेष्ठ विश्व बनने की भावी अटल होते हुए भी समर्थ भव के वरदानी बच्चे सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के, निमित्त और निर्माण के कर्म फिलॉसोफी अनुसार निमित्त बन कार्य करते हैं। दुनिया वालों को उम्मीद नहीं दिखाई देती। और आप कहते हो यह कार्य अनेक बार हुआ है, अभी भी हुआ ही पड़ा है क्योंकि स्व परिवर्तन के प्रत्यक्ष प्रमाण के आगे और कोई प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं। साथ-साथ परमात्म कार्य सदा सफल है ही।

स्लोगन:- कहना कम, करना ज्यादा—यह श्रेष्ठ लक्ष्य महान बना देगा।